अक्सर होती रहती हैं, क्या कानून में कुछ तबदीली करके वहां के निवासियों को हथियार देना तै किया गया है जिससे वे अपनी और सीमा की रक्षा कर सकें ?

**श्री जवाहरलाल नेहरू** : कहीं कहीं दिये जाते हैं, लेकिन आम तौर से देखा गया है कि हथियार देने से कुछ होता नहीं है । हथियार देने के साथ सिखाना भी होता है, डिसिप्लिन सिखाना होता है । अगर ऐसा न किया जाये तो अक्सर हथियार दुश्मन के हाथ में चले जाते हैं ।

**Mr. Speaker:** Shri Swell.

**Shri S. M. Banerjee:** Sir, I rise on a point of order.

**Mr. Speaker:** In the Question Hour, as Shri Banerjee knows, ultimately there does not turn out to be any point of order. Hon. Members have asked me that I should cover 20 questions and then they begin to argue with me. All right, now let me hear the point of order.

**श्री ए० एम० बनर्जी** : अभी प्रधान मंत्री जी ने हथियार देने के बारे में कहा कि उन लोगों को हथियार देने से काम नहीं होता और कभी कभी नुक्सान हो जाता है । इसी सदन में उन्होंने कहा था कि सीमा के लोगों को हथियार दिये जा रहे हैं जब कि बहुत जोर दिया गया था कि बारडर के लोगों को बारडर की हिफाजत के लिए हथियार दिये जायें । अब जो बयान दिया गया है उससे मालूम होता है कि हथियार सब जगह नहीं दिये गये । यह तो गलत बयान मालूम होता है . . .

**अध्यक्ष महोदय** : अगर गलतबयानी है, तो इस में प्वाइंट आफ आर्डर क्या है ?

**Shri S. M. Banerjee:** My point of order is only this.

**Mr. Speaker:** Now he is only spending time which ought to be saved.

**Shri S. M. Banerjee:** He can say anything.

**Mr. Speaker:** If he has a complaint that the answer given is not correct, he can write to me and I will just ask him to look it up and find out whether really the answer was wrong. A point of order does not arise here.

**Shri S. M. Banerjee:** Whether the hon. Minister.....

**Mr. Speaker:** Now, Shri Swell.

**Shri Swell:** The hon. Prime Minister has just now said that the frequency of our patrol on our border with Pakistan has been increased. But it appears that at the same time the frequency of the Pakistani firings happens to have increased. Can the hon. Prime Minister enlighten us as to whether there is any necessary connection between the two?

**Mr. Speaker:** I could not follow. Would he kindly repeat it?

**Shri Jawaharlal Nehru:** As I understand it, he wants to know whether there is any connection between the Pakistani firings and the increase in our patrols. I do not see any particular connection. The result should be the other way round.

### भारत-नेपाल संबन्ध

*६८२. **श्री प्रकाशवीर शास्त्री** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारत और नेपाल के संबंधों को और भी घनिष्ट करने के लिए आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कुछ नये कार्यक्रम बनाये गये हैं; और

(ख) यदि हां, तो उन की मुख्य बातें क्या हैं ?

**वैदेशिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री निदेश सिंह)** : (क) जी हां ।

(ख) हाल ही में हम ने एक नई सड़क बनाना स्वीकार किया है जो उत्तर प्रदेश को पश्चिम-मध्य नेपाल से जोड़ेगी । यह सड़क १३० मील लम्बी होगी । इस के बन जाने से पश्चिम-मध्य नेपाल का एक बहुत बड़ा हिस्सा पर्यटन और वाणिज्य के लिए खुल जायेगा तथा इस से उस देश की और अधिक आर्थिक उन्नति होगी ।

नेपाल के साथ हमारा सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक व्यापक कार्यक्रम है । हम नेपाली विद्यार्थियों को बड़ी संख्या में छात्र-वृत्तियां बराबर देते रहते हैं तथा उन्हें भारतीय विश्वविद्यालयों में और दूसरी संस्थाओं में अध्ययन करने के लिए शिक्षा संबंधी सामान्य सुविधाएं भी प्रदान करते रहते हैं । नेपाली कवियों, लेखकों, कलाकारों आदि के दल समय-समय पर भारत भ्रमण के लिए आते रहते हैं । इसी तरह अनेक अवसरों पर भारतीय साहित्यकारों और कलाकारों ने भी नेपाल की यात्रा की है ।

[(a) Yes, Sir.

(b) We have recently agreed to construct a new road connecting Uttar Pradesh with West Central Nepal. The road will be 130 miles long. It will open up vast areas of West Central Nepal to tourism, commerce and further economic development of the country.

Our programme of Cultural exchanges with Nepal is a comprenhensive one. We continue to offer a large number of scholarships to Nepalese scholars and general educational facilities for studies in Indian Universities and other institutions. Groups of Nepalese poets, Writers, Artistes etc. have visited India from time to time. Similarly Indian literatures and artistes visit Nepal on various occasions.]

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री** : नेपाल के कुछ मंत्रियों के वक्तव्यों से और नेपाल के कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों से हमारे देश में कुछ ऐसी धारणा बन चली थी कि नेपाल का झुकाव भारत की अपेक्षा चीन की तरफ अधिक है । क्या मैं जान सकता हूं कि नेपाल के महाराजा महेन्द्र की हाल की यात्रा से इस धारणा के निवारण में कुछ सहायता मिली है ? यदि हां तो सरकार उससे कहां तक संतुष्ट है ?

**श्री दिनेश सिंह** : अभी जब नेपाल के महाराजा यहां आये थे तो जो बात उन्होंने कीं उन से ऐसा लगता है कि नेपाल का झुकाव चीन की तरफ नहीं है ।

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री** : क्या मैं यह जान सकता हूं कि क्या महाराजा महेन्द्र की पिछली यात्रा के समय कुछ उन योजनाओं की भी चर्चा चली थी जो कि भारत और नेपाल के संयुक्त सहयोग से चल रही हैं और जिन में कुछ शिथिलता आ गयी थी ? यदि हां, तो क्या उन में तीव्रता लाने का निश्चय किया गया है ?

**श्री जवाहरलाल नेहरू** : सब योजनाओं का जिक्र हुआ था और उन में सब से बड़ी यह सड़क की योजना है जो कि पहाड़ों में १३० मील लम्बी बनायी जायेगी । और योजनाओं के बारे में यह निश्चय हुआ कि उन में तेजी से काम हो ।

**Shri Kapur Singh:** In view of the ancient cultural and geo-political relations between our two countries, is the Prime Minister now in a position to inform this House now that there remains no area of misunderstanding, whatsoever, between Nepal and India?

**Shri Jawaharlal Nehru:** We are at the present moment in friendly contacts and cooperative relations with the Nepal Government. They will continue. To give an undertaking about any country, about any two individuals, that there can be no area of misunderstanding is more than I can say.

**Shri Hari Vishnu Kamath:** The Deputy Minister, if I heard him aright,

said that in the talks between the King of Nepal and the Prime Minister it had transpired that Nepal was not being drawn towards China. Is the House to understand that during the talks between the Prime Minister and the King of Nepal there were no references to this subject, particularly the road building project by China from Kathmandu to Lhasa which strategically would threaten India when it is completed? If there were any talks about this matter, what was the outcome of that talk?

**Shri Jawaharlal Nehru:** So far as I remember there was no talk in particular about that particular matter. There has been correspondence and all that. It was not considered necessary to continue the talk on that particular subject. They have decided something; they are an independent country and it is not quite right for us to go on nagging at them because of that road.

**श्री राम सहाय पाण्डेय:** नेपाल के कुछ नेता, जिनके विरुद्ध नेपाल सरकार ने विद्रोह का आरोप लगाया है हमारे देश में हैं । मैं जानना चाहता हूं कि जब महाराजा महेन्द्र हमारे देश में आए थे तो उनके बारे में भी कोई बात हुई थी ?

**श्री जवाहरलाल नेहरू** : जी नहीं, इस सम्बन्ध में कोई बात नहीं हुई ।

**श्री भक्त दर्शन** : श्रीमान्, अभी मूल प्रश्न के उत्तर में बताया गया कि एक सड़क बनाने की योजना है । इससे पहले इस सदन में दो तीन और योजनाओं का जिक्र किया गया था जिनके बारे में सहायता देना स्वीकार किया गया है । मैं जानना चाहता हूं कि नैपाल के बारे में कोई कौमप्रहैंसिव योजना बनाई जा रही है कि पांच, सात या दस वर्षों में नैपाल को भारत एक खास सहायता दे जिससे नैपाल का पूरी तरह विकास हो सके ?

**श्री दिनेश सिंह** : जी हां, एक जनरल प्लान के अन्तर्गत हम नैपाल को पांच साल के अन्दर करीब २१ करोड़ रुपए की सहायता देंगे । उसके अन्दर खास खास प्रोजेक्ट्स आती हैं और वे दोनों सरकारों की राय से तै होती हैं ।

**श्री सिंहासन सिंह** : अभी जिस १३० मील लम्बी सड़क के निर्माण का जिक्र किया गया है, यह सड़क कहां से ले कर कहां तक बनने वाली है ?

**श्री जवाहरलाल नेहरू** : वह सड़क पोखरा जाएगी । ठीक उसका नाम याद नहीं है लेकिन वह पोखरा तक जाएगी ।

**श्री सिंहासन सिंह** : वह प्रारम्भ कहां से होगी ?

**श्री जवाहरलाल नेहरू** : वह उत्तर प्रदेश की सीमा से प्रारम्भ होगा ।

**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : क्या नेपाल के महाराज महेन्द्र और प्रधान मंत्री के बीच चीन और नैपाल के मध्य बढ़ते हुए व्यापारिक और राजनैतिक सम्बन्धों के बारे में और विशेषतः चीन के भारत पर आक्रमण के सम्बन्ध में कोई उल्लेख या बातचीत हुई थी ? यदि हां, तो महाराज महेन्द्र का रुख क्या था ?

**श्री जवाहरलाल नेहरू** : माननीय सदस्य को यह समझना चाहिए कि ऐसी बातों का इश्तिहार नहीं किया जाता है न उन का जिक्र होता है और जगहों पर ।

**श्री योगेन्द्र झा** : बिहार में जो कोसी की पश्चिमी नहर बनने वाली है वह नहर २२ मील नैपाल की सीमा में होगी, क्या प्रधान मंत्री जी ने नैपाल नरेश के साथ अपनी बातचीत में इस समस्या पर बातचीत की, यदि हां तो उस का क्या नतीजा निकला ?

**श्री जवाहरलाल नेहरू** : कोसी के बारे में और दूसरी और योजनाओं के बारे में बातें हुई थीं बल्कि मारे जो पावर एंड इर्रीगेशन के मिनिस्टर हैं व भी उन बातों में शरीक हुए थे । अब ख़ास कर कोसी न र के बारे में तो मैं नहीं क सकता लेकिन उस में एक समझौता हुआ था कि क्या क्या करना है हमें ।

**Indian Defence Mission to Moscow**

\+

*683. **Shri S. M. Banerjee:**
**Shri Raghunath Singh:**
**Shri Onkar Lal Berwa:**
**Shri Hem Raj:**
**Shri Prakash Vir Shastri:**
**Shri Bhagwat Jha Azad:**
**Shri Balkrishna Wasnik:**
**Shri P. C. Borooah:**
**Shri Maheswar Naik:**
**Shri D. C. Sharma:**
**Shri Harish Chandra Mathur:**
**Shri Yashpal Singh:**
**Shri Sivamurthi Swamy:**
**Shri Mohan Swarup:**
**Shri D. D. Mantri:**
**Shri Indrajit Gupta:**
**Shri Daji:**
**Shrimati Renu Chakravartt**
**Shri E. Madhusudan Rao:**
**Shri Rameshwar Tantia:**
**Shri Bishwanth Roy:**

Will the Minister of **Defence** be pleased to state:

(a) whether the Indian Defence Mission led by the Secretary of the erstwhile Ministry of Economic and Defence Co-ordination visited Moscow to explore the chances of obtaining certain types of Russian equipment for India's armed forces; and

(b) if so, the extent to which success was achieved?

**The Deputy Minister in the Ministry of Defence (Shri D. R. Chavan):** (a) Yes, Sir.

(b) The delegation was successful in concluding an agreement and contracts for the supply of certain equipments. It will not be in the public interest to disclose the details.

**Shri S. M. Banerjee:** May I know the terms of these contracts and whether we are getting arms and equipment without any condition?

**The Minister of Defence (Shri Y. B. Chavan):** I think that there are no conditions.

**Shri S. M. Banerjee:** May I know whether it is a fact that the Soviet Union has also agreed to give us automatic weapons and train our technical personnel so that they are able to manufacture them here? May I know whether there is any truth in this?

**Shri Y. B. Chavan:** I think the hon. Member is going into the details. I cannot give the details.

**Shri S. M. Banerjee:** I am not asking for any details. I only want to know whether it is a fact that they are going to give us automatic weapons and train our personnel. I do not want to know the number or anything of that sort, for I know what secrecy is.

**Mr. Speaker:** The hon. Member wants to know whether they are going to train our personnel. Can that portion of the question be answered?

**Shri Y. B. Chavan:** Naturally, whenever equipment is received, certainly, training of the personnel is involved in it.

**Shri Kapur Singh:** We are asking about manufacture, and not training.

**Shri Ranga:** The MIG deal is no secret. The establishment of the factory for the manufacture of the MIGs with the help of the Soviet Union is no secret. So, how do Government consider these small things to be of such great secrecy that they have to invoke national interest for not disclosing them?